



मार्च 2020

वर्ष : 3 अंक : 6

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार ,मार्च 2020 में संस्थान से जुड़ी विविध अनुसंधान गतिविधियों , उपलब्धियों और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन से मात्स्यिकी क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय पटल पर संस्थान की विजीविलिटी बढ़ने का संकेत मिलता है। संस्थान मुख्यालय में कार्यरत डा. बी. पी. मोहंती, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभागाध्यक्ष, मात्स्यिकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग ने नया पदभार, सहायक महानिदेशक, (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तौर पर संभाला है। मैं डा. मोहंती के इस सफलता पर हार्दिक बधाई देता है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।



अनुसंधान गतिविधियों में प्रमुख रहा - टिहरी झील में प्रति इकाई औसत मत्स्य पकड़ गोल्डन माहेसर की तुलना में कॉमन कार्प प्रजातियों की काफी अधिक देखी गयी है। टर्मिनलिया अर्जुना के छाल के पाउडर का उपयोग मछली के लिए औषधीय खुराक तैयार करने के लिए एक पूरक के रूप में किया जा सकता है।

संस्थान ने AEHMS, कनाडा, IFSI बैरकपुर, ICAR-CIFRI, बैरकपुर और कॉलेज ऑफ फिशरीज, GBPUA & T ने एक साथ मिलकर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन “इकोसिस्टम हेल्थ एंड फिशरीज ऑफ इंडियन इनलैंड वाटर्स: मल्टिपल स्ट्रेसर्स, मैनेजमेंट एंड कंजर्वेशन” का आयोजन गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में किया है।



संस्थान की बैठकों में शिमला में एसजेवीएन लिमिटेड के साथ फिश पास डिजाइन का पर्यवेक्षण और आंकलन के लिए बैठक, भारतीय फार्माकोलॉजिकल सोसाइटी, पश्चिम बंगाल और पूर्वी जोनल कोलोक्विम IPSWBCON, रिस्थितिकी तंत्र, मत्स्य पालन और खाद्य सुरक्षा (ClimFishCon 2020) पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता, कृषि में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता तथा संस्थान में “अंतर्स्थलीय खुला जलतंत्रों के स्वास्थ्य प्रबंधन में विकास” शीत सत्र का आयोजन आदि प्रमुख है।

विक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियां

टिहरी झील के मत्स्य पकड़ के आंकड़ों से पता चलता है कि इसमें मुख्यतः दो प्रजातियां, *टोर प्यूटीटोरा* और *साइप्रिनस कार्पिओ* पायी जाती हैं। प्रति इकाई औसत मत्स्य पकड़ (Mean catch per unit efforts) गोल्डन महासीर की तुलना में कॉमन कार्प प्रजातियों की काफी अधिक देखी गयी है। यह इंगित करता है कि कॉमन कार्प प्रजातियों द्वारा भोजन और आवास के लिए प्रतिस्पर्धा के कारण इस झील की मूल जैव विविधता पर प्रभाव पड़ेगा।

झारखंड के पतरातू जलाशय में मत्स्य आवास के मापदंडों और जलीय बायोटा के स्थानिक और अस्थायी मूल्यांकन यह बताते हैं कि मछली और पादप प्लवकों की बहुतायत पर जल की गहराई, पीएच, घुलित ऑक्सीजन और तापमान का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

पश्चिम बंगाल के 27 भारतीय- गांगेय भाग के बाढकृत आर्द्रक्षेत्रों में पोषक तत्वों के जमाव का अध्ययन और मूल्यांकन ट्रोपिकल स्टेट इंडेक्स (Tropical State Index) द्वारा किया गया था। कार्लसन और लैपारेल्ली टीएसआई स्कोरिंग इंडेक्स का उपयोग ऐतिहासिक और निरंतर डेटासेट के लिए बेहतर दृष्टिकोण निर्धारित करने और संसाधनों के निरंतर प्रबंधन के लिए जलवायु परिवर्तनशीलता के बीच अंतर्संबंध को बताने के लिए किया गया था।

टर्मिनलिया अर्जुना के अर्क में उपस्थित खनिज प्रोफाइलिंग से पता चला है कि इसके छाल के पाउडर का उपयोग मछली के लिए औषधीय खुराक तैयार करने के लिए एक पूरक के रूप में किया जा सकता है। मेथनॉलिक फलों के अर्क का उपयोग शरीर में जिंक की कमी और तंत्रिका विकारों के निदान करने के लिए किया जा सकता है।

कावेरी नदी के मध्य भाग के मयूर बैराज में ईल (*एंगुइला बेंगालेंसिस*) मछलियों को पकड़ने के लिए एक पारंपरिक जाल, 'परी' का उपयोग किया जाता है। यह जाल बांस के फट्टे से बेलनाकार आकार में बना होता है। इस क्षेत्र में इस तरह के लगभग 250 जाल उपयोग किए गए हैं।

उत्तर बंगाल में तीस्ता नदी के तलछट में साइपरमेथिन, जो एक सिंथेटिक पाइरेथ्रोइड कीटनाशक है और जिसे आमतौर पर इस्तेमाल किया जाता है, इसका स्तर 0.482 मिलीग्राम / किग्रा तक पाया गया। इस प्रकार के कीटनाशकों से नदी में प्रदूषण और जहरीले और खतरनाक पदार्थों की मात्रा बढ़ती है और जलीय खाद्य श्रृंखला में संदूषण की संभावना अधिक होती है।

महत्वपूर्ण बैठकें

संस्थान ने दिनांक 01 फरवरी, 2020 को शिमला में एसजेवीएन लिमिटेड (भारत सरकार और हिमाचल प्रदेश सरकार का एक संयुक्त उपक्रम) के साथ एक बैठक किया जिसका उद्देश्य एसजेवीएन की आगामी जल विद्युत परियोजना में फिश पास डिजाइन का पर्यवेक्षण और आंकलन करना है।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 6-7 फरवरी, 2020 को बिधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर, पश्चिम बंगाल में भारतीय फार्माकोलॉजिकल सोसाइटी, पश्चिम बंगाल और पूर्वी जोनल कोलोकम IPSWBCON, 2020 के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया। इस कोलोकम का उद्देश्य परस्परिक उद्यम का विकास करना है।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 09 फरवरी, 2020 को नेहरू युवा केंद्र संगठन, कोलकाता के रामकृष्णा मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर में कोलकाता, दक्षिण कोलकाता के युवा क्लब विकास सम्मेलन द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भाग लिया।

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने कोच्चि, भारत में दिनांक 11-14 फरवरी 2020 के दौरान हाइड्रोलॉजिकल चक्र, पारिस्थितिकी तंत्र, मत्स्य पालन और खाद्य सुरक्षा (ClimFishCon 2020) पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 20-21 फरवरी, 2020 तक ICAR-NAARM परिसर, हैदराबाद में कृषि में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

संस्थान के निदेशक दिनांक 22 फरवरी 2020 को ई-मत्स्य अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र, जूलाजी विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, सिलीगुड़ी द्वारा आयोजित "हैड-ऑन ट्रेनिंग ऑन फिश डिजीज मैनेजमेंट ऑन एक्वाकल्चर" कार्यशाला में मुख्य वक्ता थे।

संस्थान के प्रयागराज केंद्र के वैज्ञानिकों ने दिनांक 9 जनवरी से 9 फरवरी, 2020 तक माघ मेला प्रयागराज दुरिग में नमामि गंगे बैनर के तहत प्रदर्शनी में भाग लिया। केंद्रीय जल राज्य मंत्री शाकिर ने सीआईएफआरआई मंडप का दौरा किया।

आय वृद्धि के लिए बिहार के भागलपुर जिले के मछुआरों के ज्ञान और कौशल वृद्धि के प्रयास

संस्थान में बिहार के भागलपुर जिले के मछुआरों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से दिनांक 18 से 24 फरवरी 2020, के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। बिहार का भागलपुर जिला अंतर्स्थलीय खुले जल संसाधनों से परिपूर्ण है पर वैज्ञानिक तकनीकों की कमी के कारण मछली उत्पादन के मामले में यह जिला अभी तक अपनी उच्चतम क्षमता नहीं प्राप्त कर सका है। कार्यक्रम में कुल 31 सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन में संस्थान के निदेशक



डॉ. बि.के. दास ने स्थायी आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों के कौशल



विकास और आय सृजन के अवसरों पर जोर दिया। मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, पिंजरे और पेन में मछली पालन तकनीक, विभिन्न मछली पालन के आर्थिक पहलू, मछली विपणन आदि पर प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें आरए सिस्टम और संस्थान की हैचरी इकाई पर जानकारी देने के साथ आईसीएआर-सीफा कल्याणी के मछली फार्मों, सीआईएफई, कोलकाता, बालागढ़, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू), और गैलिफ स्ट्रीट के अलंकारी मछली बाजारों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक डॉ. अर्चना के दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, विस्तार और प्रशिक्षण सेल और सुश्री सुकन्या, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर द्वारा कार्यान्वित किया गया।

आजीविका सुधार के लिए रंगीन मछली पालन पर सुंदरवन की महिलाओं में ज्ञान-प्रसार

संस्थान ने 6-8 फरवरी, 2020 के दौरान सुंदरवन के सुदूर द्वीपों की महिला मछुआरों को आजीविका में सुधार के लिए राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया, जहाँ



150 महिलाओं ने रंगीन मछली पालन तकनीक अपनाने के लिए सक्रिय भाग लिया। सुंदरवन, के बहुत ही दुर्गम दूरदराज के द्वीपों अमतोली और कछुखली की महिला मछुआरों को अतिरिक्त आजीविका

अर्जित करने के लिए और रंगीन मछली पालन विकसित करने के लिए, ज्ञान का विस्तार करने के लिए चुना गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते



हुए, संस्थान के निदेशक डॉ. बी.के. दास ने महिला समुदाय को इस सजावटी रंगीन मछली पालन करने के लिए आगे आने के लिए कहा, जो बहुत बड़ा रोजगार उत्पन्न करने के लिए एक बहुत ही शक्तिशाली क्षेत्र है। उन्हीने यह भी कहा कि इन क्षेत्रों में अतिरिक्त आजीविका के लिए अन्य कार्यों के साथ कम लागत के एक्वेरियम बनाना, जिसमें सजावटी मछली की गतिविधियों का लगभग 70% खर्च शामिल होता है, बाजार के मांग के आकार तक मछली के बीज पैदा करने,



प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षक बनने, स्थानीय बाजार निर्माण और सामुदायिक भागीदारी मोड के माध्यम से सुंदरवन से व्यापार का विस्तार करना है। इस क्षेत्र को मजबूत करने के लिए डॉ. दास ने बताया कि सुंदरवन में महिला लोक को सशक्त बनाने के लिए सामुदायिक आधार पर महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया है, जो परिवार के लिए अतिरिक्त आजीविका बनाने का लक्ष्य रखते हैं जो केवल मत्स्य पालन सहित कृषि गतिविधियों पर निर्भर हैं। प्रशिक्षण के दौरान जरूरत-आधारित कार्य तकनीकी का उपयोग किया गया था जिसमें एक्वेरियम और उनके सहायक उपकरण बनाना और रखरखाव करना शामिल था, सजावटी मछली प्रजातियों की पालन तकनीकी, स्टॉक की गई मछलियों के भोजन, सजावटी मछली प्रजातियों की हेपा संस्कृति, घरेलू जल निकायों का उपयोग, तलछट और जल गुणवत्ता प्रबंधन, इन प्रशिक्षण अवधियों के दौरान विपणन चैनल विकास के लिए सुझाव दिये गये।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन “इकोसिस्टम हेल्थ एंड फिशरीज ऑफ इंडियन इनलैंड वाटर्स: मल्टिपल स्ट्रेसर्स, मैनेजमेंट एंड कंजर्वेशन” का आयोजन



अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन “इकोसिस्टम हेल्थ एंड फिशरीज ऑफ इंडियन इनलैंड वाटर्स: मल्टिपल स्ट्रेसर्स, मैनेजमेंट एंड कंजर्वेशन” का आयोजन दिनांक 17-19 फरवरी, 2020 के दौरान गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में हुआ। यह सम्मेलन इनलैंड फिशरीज सोसाइटी ऑफ इंडिया (IFSI), बैरकपुर; भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर (ICAR-CIFRI); कॉलेज ऑफ फिशरीज, जी.बी. पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (GBPUAT); जलीय पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य और प्रबंधन सोसायटी (AEHMS), कनाडा; और प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम (PFGF), मुंबई द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष डॉ. तेज प्रताप, कुलपति गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर; मुख्य अतिथि, डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और उपाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण, निदेशक ICAR-CIFE मुंबई थे। प्रोफ. ए. पी. शर्मा, प्रोफेसर और रजिस्ट्रार ने सम्मेलन के विषय के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि AEHMS, कनाडा, IFSI बैरकपुर, ICAR-CIFRI, बैरकपुर और कॉलेज ऑफ फिशरीज,



GBPUA & T ने एक साथ आकर इस महत्वपूर्ण सम्मेलन का आयोजन किया है जिसका उद्देश्य नदियों, जलाशयों, झीलों, तालाब और पोखर जैसे विभिन्न प्रकार के आवासों के पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना है। संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने अपने संबोधन में भारत में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन की स्थिति के बारे में जानकारी दी और कहा कि इससे जलवायु परिवर्तन, आक्रामक प्रजातियों, जल क्षेत्रों के बीच संपर्क, आर्द्रभूमि, जैव विविधता और भारत में जलीय प्रदूषण, नदियों का पुनरुत्थान और प्रबंधन के सभी पहलुओं जैसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य विषयों से निपटेगा।





AEHMS कनाडा के अध्यक्ष, डॉ. एम. मुनव्वर ने अपने संबोधन में पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य और इसके संरक्षण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि नदियों और अन्य खुले जल निकायों के स्वास्थ्य और मत्स्य पालन को बनाए रखने के लिए प्रबंधन और संरक्षण महत्वपूर्ण हैं।

डॉ. जे के जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान



परिषद, नई दिल्ली और मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मत्स्य क्षेत्र के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत की मत्स्य टोकरी में अंतर्स्थलीय मत्स्य और जलीय कृषि का योगदान 65% से अधिक है। डॉ. तेज प्रताप, कुलपति, जीबी पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उम्मीद जताई कि यह सम्मेलन विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, सलाहकारों, छात्रों, अन्य हितधारकों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने, साझा करने के लिए एक अंतर-अनुशासनात्मक मंच प्रदान करेगा। सूचना, सामान्य प्लेटफार्म का निर्माण और भारत की अंतर्स्थलीय जल पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य और जैव विविधता को संरक्षित करने पर एक आम सहमति बनाया जाय।

इस अवसर पर सम्मेलन के स्मारिका और गणमान्य व्यक्तियों द्वारा सार की पुस्तक का विमोचन किया गया। दो पुस्तिकाओं "गंगा नदी की आक्रामक प्रजातियाँ" और गंगा नदी के भारतीय मेजर कार्प जर्मप्लाज्म का एक्स-सीटू संरक्षण भी जारी किया गया।

डॉ. ए. के. उपाध्याय, डीन, कॉलेज ऑफ फिशरीज, जी बी पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।



“एडवांसेस इन मैनेजमेंट ऑफ इनलैंड ओपन वाटर इकोसिस्टम हेल्थ” पर शीतकालीन स्कूल का आयोजन

संस्थान ने 21 जनवरी से 10 फरवरी, 2020 के दौरान "एडवांसेज इन मैनेजमेंट ऑफ इनलैंड ओपन वाटर इकोसिस्टम हेल्थ" पर आईसीएआर-



प्रायोजित शीतकालीन स्कूल का आयोजन किया है। डॉ. बी.सी. मल, कुलपति, जे.आई.एस. विश्वविद्यालय, कोलकाता समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे। डॉ. बी. पी. मोहंती, पाठ्यक्रम निदेशक और विभागाध्यक्ष, FREM डिवीजन ने मुख्य अतिथि और अतिथि का स्वागत करते हुए शीतकालीन स्कूल के संगठन के बारे में बताया कि इस स्कूल में 30 व्याख्यान और 11 प्रयोगशाला जैसे सत्रजलीय पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य मूल्यांकन में आधुनिक दृष्टिकोण, खुले पानी में उभरते हुए प्रदूषण, भारतीय नदियों में भारी धातु संदूषण, अंतर्देशीय खुले जल में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, अंतर्देशीय जलीय प्रौद्योगिकी प्रबंधन में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी, मेटाजेनोमिक्स, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में हाल के दृष्टिकोण, खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य, बर्ज आवाजाही के प्रभाव का आकलन, पारिस्थितिकी तंत्र में

नैनो प्रौद्योगिकी स्वास्थ्य मूल्यांकन, न्यूट्रिजेनोमिक्स, कृत्रिम बुद्धि, जलीय कृषि और मत्स्य पालन में बड़ा डेटा और वस्तुअंतर्जाल, आर्द्रभूमि मत्स्य पालन प्रबंधन में नीति विकल्प, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आर्थिक मूल्यांकन।

इस शीतकालीन स्कूल OUAT, ICAR-CIFA, ICAR-CIFE और खल्लिकोट विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ वैज्ञानिक द्वारा व्याख्यान दिए गए। इस शीतकालीन स्कूल के प्रतिभागियों में वैज्ञानिक, कृषि संकाय और कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) के विषय विशेषज्ञ शामिल थे।

संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने अपने संबोधन में अंतर्स्थलीय मत्स्य



पालन में अग्रिम अनुसंधान के लिए विश्वविद्यालयों और आईसीएआर संस्थानों के बीच अधिक सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों से अपने संबंधित संस्थानों में इस शीतकालीन स्कूल में सीखी गई तकनीक का उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नई प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग जैसे जीआईएस और रिमोट सेंसिंग, प्रोटीओमिक्स आदि निश्चित रूप से लंबे समय में प्रतिभागियों की मदद करेंगे।

डॉ.बी.सी. मल, कुलपति, जेआईएस विश्वविद्यालय, कोलकाता ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान में भारत का मछली उत्पादन 13 मिलियन मीट्रिक टन है और कहा कि अपने बजट भाषण में भारत के माननीय वित्त मंत्री ने वर्ष 2023-24 तक, 20 मिलियन मीट्रिक टन मछली उत्पादन का लक्ष्य तय किया है। उन्होंने प्रतिभागियों को, किसानों और छात्रों के क्षमता निर्माण में शीतकालीन स्कूल में सीखी गई नई

तकनीकों का उपयोग करने के लिए कहा। मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। डॉ. सोमा दास सरकार, पाठ्यक्रम समन्वयक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।



बिहार के पूर्वी चंपारण के रूल्ही आर्द्रभूमि में मत्स्य मेला का आयोजन

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, कोलकता ने 9 फरवरी, 2020 को मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, बिहार में 80 हेक्टेयर जल क्षेत्र के साथ मौसमी खुली गोखुर झील के किनारे, मत्स्य मेला का आयोजन किया। मत्स्य अधिकारी, पूर्वी चंपारण, विभिन्न हितधारकों और 100 से अधिक मछुआरों के साथ स्थानीय अधिकारी। खरपतवार से संक्रमित वेटलैंड

पकड़ने के दिनों में 35 दिनों से 93 दिनों तक वृद्धि और मछली की उपज 60 से 153 किलोग्राम / हेक्टेयर तक पहुंच गई है। लंबे समय तक मछली पकड़ने के दिनों ने अन्य शहरों में गैर-मछली पकड़ने की नौकरियों के लिए मछुआरों के प्रवास को भी कम कर दिया है।

डीडी न्यूज पटना सहित प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने मछली फसल मेला की व्यापक कवरेज दी और यह बिहार के राज्य में दूसरी नीली क्रांति की शुरुआत करने के लिए इस तरह के वैज्ञानिक प्रबंधन मानदंडों को अपनाने के लिए क्षेत्र के मछुआरों को प्रेरित करने में मदद करेगा।

आजीविका सुरक्षा के लिए बिहार के नवादा जिले के मछुआरों की क्षमता का विकास

बिहार का नवादा जिला, अंतर्स्थलीय खुला जल क्षेत्रों जैसे नदियों, चौर, बाढ़कृत आर्द्रभूमि, गोखुर झीलों और जलाशयों से संपन्न है पर प्रचुर मात्रा में जलीय संसाधनों के बावजूद यहाँ पर्याप्त मछली का उत्पादन कम है। अतः संस्थान ने मुख्यालय, बैरकपुर में नवादा जिले के मछुआरों के लिए "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर" दिनांक 11 से 17 फरवरी 2020 तक कौशल विकास, क्षमता निर्माण और मछुआरों की आय में



वृद्धि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में कुल 29 मछुआरों ने भाग लिया है। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डा. बि.के. दास ने अपनी स्थायी आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों के कौशल विकास पर जोर दिया। प्रशिक्षण में मछुआरों को क्षेत्र के दौरे के साथ सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान से अवगत कराया गया। उन्हे अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं, जैसे मिट्टी और जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, चारा प्रबंधन, अलंकारी मछली पालन, मछलियों के प्रजनन पहलू, मछलियों के पोषण संबंधी पहलू, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, आर्द्रभूमि मत्स्य पालन प्रबंधन, पिंजरे और पेन में मछली पालन तकनीक, विभिन्न मछली पालन के आर्थिक पहलू, मछली विपणन के बारे में बताया गया। प्रशिक्षुओं को संस्थान के पुनः परिचालित एकाकल्चर सिस्टम (आरएएस) और हैचरी इकाई से अवगत कराया गया। विभिन्न मत्स्य गतिविधियों में उन्हें उजागर करने के लिए, आईसीएआर-सीफा कल्याणी मछली फार्मों, सीआईएफई, कोलकाता, खामरगाची निजी मछली फार्मों, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू) और सजावटी मछली बाजारों का दौरा कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन, डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रधान वैज्ञानिक,



नगण्य प्रबंधन इनपुट के साथ अपमानजनक स्थिति में पड़ा हुआ था, जिस पर आसपास के चार गांवों के लगभग 300 मछुआरे अपनी आजीविका के लिए निर्भर थे।

48 हजार एमटी मछली का हुआ उत्पादन, आमदनी हुई दोगुनी

नेपाल को भा रहीं पूर्वी चंपारण की कतला और रोहू मछलियां

भारतीय मेजर कर्क का रिजल्ट रस अस्त

10.02.2020

दुर्गा मां शीघ्र हो

भारतीय मेजर कर्क का रिजल्ट रस अस्त

दुर्गा मां शीघ्र हो

भारतीय मेजर कर्क का रिजल्ट रस अस्त

दुर्गा मां शीघ्र हो

रूल्ही मौन में पिछले दो वर्षों के दौरान संस्थान तकनीकी हस्तक्षेप ने प्रति यूनिट प्रयास को पकड़ने में कई गुना सुधार किया है, मछली

मछुआरों की आय बढ़ कर हुई तीगुनी

मोतिहारी | हिन्दुस्तान संवाददाता

पापलट प्रोजेक्ट से मछुआरों की आर्थिक स्थिति में काफी बदलाव आया है। वे पहले 32 दिन मछली पालन का कार्य करते थे। अब यह बढ़कर 93 दिन हो गया है। इससे उनकी आय में तीगुनी वृद्धि हुई है।

यह बातें केन्द्रीय अंतरस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर कोलकाता के संस्थान निदेशक डॉ. बीके दास ने रविवार को रूल्ही मन पर प्रसिद्ध मेला में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि भारत सरकार एनईडीवी के मदद से रूल्ही, करिया, मिरसा, मधरिया व कोटिया मन का विकास कर मछली पालन किया जा रहा है। नवी तकनीक

रविवार को मत्स्य उत्पाद के अवसर पर रूल्ही मन की मछली दिखाई अधिकांरी।

से मछली का उत्पादन बढ़ा है। कहा कि संस्थान के द्वारा केच, पेन, जालख का निर्माण कर नवी तकनीक से मछली पालन कराया जा रहा है। जिला मत्स्य पर्यटनिकारी एस कुमार ने कहा कि इस परियोजना से जिले के मछुआरों की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत हुई है। इस परियोजना को और आगे बढ़ने से मछुआरों की स्थिति और बेहतर होगी। बीच पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एमए हसन, एमएस चंद्रा, राजू बैठा, सुमन कुमारी आदि थे।

डा. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, विस्तार और प्रशिक्षण प्रकोष्ठ और सुश्री सुकन्या, वैज्ञानिक, द्वारा किया गया।

ई-ऑफिस पर प्रशिक्षण

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर में 11-12 फरवरी, 2020 के दौरान ई-ऑफिस (ई-फाइल) पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित



किया गया था। इस ई-ऑफिस कार्यशाला में संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर और इसके 'क्षेत्रीय केंद्रों' के कुल 23 प्रशासनिक और तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया है। इसमें भा.कृ.अनु.प.-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान (जॉन-IV) के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता और भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो का क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता के कर्मचारियों ने भी इस में ई-ऑफिस प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम / जागरूकता कार्यशाला / दिवस /

संस्थान में दिनांक 3-5 फरवरी 2020 को मध्यप्रदेश के मात्स्यिकी विभाग के विभागीय अधिकारियों के लिए "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 25 मत्स्य निरीक्षकों ने भाग लिया।

संस्थान में दिनांक 25-29 फरवरी 2020 को त्रिपुरा के डंबूर जलाशय के मत्स्य किसानों के लिए संस्थान ने "त्रिपुरा में पेन एंड केज कल्चर के विकास और प्रबंधन" पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें 42 आदिवासी मछुआरे (38 पुरुष और 4 महिलाएं, जो चकमा और त्रिपुरा जनजातियों से संबंधित हैं) और त्रिपुरा के धलाई जिले के 2



मत्स्य अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

संस्थान मुख्यालय में कार्यरत डा. बी. पी. मोहंती, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभागाध्यक्ष, मात्स्यिकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग दिनांक 29 फरवरी, 2020 से संस्थान की सेवा से मुक्त हुये। डा. मोहंती ने इसके बाद नया पदभार, सहायक महानिदेशक, (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तौर पर संभाला है। संस्थान डा. मोहंती के इस सफलता पर हार्दिक बधाई देता है और यह कामना करता है कि वे सफलता के राह में इसी प्रकार आगे भी अग्रसर होते रहें।

सम्पादक मंडल की तरफ से

सम्पादन मण्डल इस कोरोना महामारी में आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है। इस महामारी का सामना हम सभी को हिम्मत से करना है जिससे हम स्वयं और अपने परिवार को सुरक्षित और स्वस्थ रख सकें। धन्यवाद ,



कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यशाला के नोडल अधिकारी श्री एस के साहू, वैज्ञानिक और प्रभारी, एकेएमयू थे। श्री राकेश कुमार सैनी, मुख्य तकनीकी अधिकारी (आईटी), भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली ने अपनी टीम के साथ कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव ताल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम **फोटोग्राफी:** सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in